SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्र छात्राओं की व्यावसायिक रुचियों का अध्ययन

लक्ष्मी वर्मा, शोधार्थी, शिक्षा विभाग
जगद्गुरु शंकराचार्य कॉलेज ऑफ एजुकेशन, भिलाई, दुर्ग, छत्तसीगढ़, भारत
अंजना, पीएच–डी., शोध निर्देशिका, प्राचार्य
प्रिज्म स्कूल ऑफ़ एजुकेशन, भिलाई, दुर्ग, छत्तसीगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Authors
लक्ष्मी वर्मा, शोधार्थी
अंजना, पीएच–डी.
E-mail : vlaxmi322@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 15/04/2025
Revised on : 16/06/2025
Accepted on : 25/06/2025
Overall Similarity : 02% on 17/06/2025

शोध सार

मानव जीवन निरंतर विकासशील होने के साथ–साथ भौतिकता को छूने में भी पीछे नहीं है। भौतिक रूप से समृद्ध एवं खुशहाल जीवन जीने के लिए उसका अध्यात्म के प्रति रुचि,समाज के आदर्श नियमों परंपराओं एवं विश्वासों से धीरे–धीरे विमुख होते चले जाना समाज के लिए हानिकारक साबित हो रहा है। भौतिक संसाधनों के अधिक उपयोग के कारण धीरे–धीरे व्यक्ति निराशा, कुंठा,हताशा एवं व्यवसायिक दुश्चिंता की ओर अग्रसर होते जा रहा है। रोजगार व्यक्ति के जीवकोपार्जन का माध्यम ही नहीं अपितु यह समाज में हमारी भूमिका एवं अस्तित्व को निर्धारित करती है। रोजगार के बिना व्यक्ति अपने जीवन को सुचारू एवं सुखद रूप से नहीं चला सकता। अच्छे जीवन के लिए व्यक्ति के पास अच्छा कार्य या रोजगार होना चाहिए जिससे वह अपने उन्नति एवं विकास कर सके तथा अपने साथ–साथ राष्ट्र और देश के विकास एवं उन्नति में भागीदारी निभा सके। प्रस्तुत शोध कार्य के लिए उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्र–छात्राओं को लिया गया है जिसमें 20 छात्र एवं 20 छात्राएं सम्मिलित हैं। छात्र–छात्राओं का चयन स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिदर्श द्वारा किया गया है। उपकरण के रूप में डॉ. एस. पी. कुलश्रेष्ठ द्वारा निर्मित व्यावसायिक रुचि प्रपत्र का प्रयोग किया गया है। सांख्यिकी विश्लेषण संगणना की गई और अध्ययन में पाया गया कि छात्र और छात्राओं की व्यावसायिक रुचि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

मुख्य शब्द

उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, व्यावसायिक रुचि, छात्र–छात्राएं.

भूमिका

शिक्षा मानव के विकास का सर्वोत्तम साधन है शिक्षा के कार्यों में मुख्य कार्य मानव का सर्वांगीण विकास करके उसे आत्मनिर्भरता प्रदान करना है। आत्मनिर्भर बनने के लिए शिक्षा का रोजगार परख होना आवश्यक है हस्तकला एवं प्रौद्योगिकी का ज्ञान से युक्त उपयोगी और आत्मनिर्भरता प्राप्त करने वाली शिक्षा को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। शिक्षा स्वरोजगार या आजीविका पैदा नहीं कर सकती उसके लिए व्यवसायिक शिक्षा का होना आवश्यक है। व्यावसायिक शिक्षा के द्वारा रोजगार एवं आजीविका प्राप्त करने के साथ–साथ स्वाध्याय स्व अनुभव और अपने कौशल से उच्च उपलब्धि प्राप्त करने में मानव समर्थ है रोजगार के लिए व्यक्ति में व्यावसायिक दृष्टिकोण का होना आवश्यक है। युवकों में आत्मविश्वास पैदा करने के लिए प्रारंभ से ही छात्रों में व्यावसायिक दृष्टिकोण और व्यावसायिक रुचि का विकास किया जाए। कक्षा आठवीं से ही उनकी रुचियां सामाजिक आर्थिक स्थिति और सामाजिक उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए उचित निर्देशन की व्यवस्था की जानी चाहिए उचित परामर्श के द्वारा छात्रों में अवसर पहचान और उनका सर्वोत्तम उपयोग करने की योग्यता विकसित होगी गांधी जी के शिक्षा का मूल उद्देश्य युवाओं को व्यवसायिक ज्ञान प्रदान करके उसमें आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता पैदा किया जाना है।

अध्ययन की आवश्यकता

माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक स्तर पर छात्र–छात्राएं किशोरावस्था के होते हैं। शिक्षा प्राप्त करने के बाद उचित व्यवसाय की प्राप्ति के लिए आवश्यक होता है विषयों का चुनाव सही ढंग से किया जाए। माता–पिता के उच्च आकांक्षाएं, आधुनिकता एवं भौतिकता की दौड़ पारिवारिक एवं सामाजिक परिवेश और कई बार अपने रुचियां के अनुकूल विषयों व्यवसायों में प्रवेश नहीं मिल पाना, अपने योग्यता और वास्तविक लक्ष्य को नहीं जानने के कारण भी उपयुक्त व्यवसाय का चयन नहीं कर पाते हैं, समुचित निर्देशन के अभाव और उपलब्ध अवसरों की जानकारी नहीं मिल पाने के कारण गलत विषय एवं व्यवसाय का चयन कर लेते हैं इसलिए व्यवसाय एवं विषय के चयन के लिए आवश्यक हो जाता है कि उन्हें उचित निर्देशन एवं परामर्श दिया जाए। कार्य के प्रति रुचि मनुष्य के बौद्धिक एवं स्वाभाविक विकास में सहायक होती है और किसी भी व्यक्ति की व्यावसायिक सफलता के लिए बौद्धिक शक्ति का होना आवश्यक है, इन्हीं बारीकियों को समझने और जानने के लिए इस अध्ययन की आवश्यकता महसूस की गई।

समस्या कथन

उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्र–छात्राओं की रुचियों का अध्ययन करना।

संबंधित शोध अध्ययन

ए. के. जावेद (2007) ने वाणिज्य और विज्ञान के छात्रों की व्यावसायिक रुचियों का समस्यात्मक अध्ययन किया और निष्कर्ष में पाया कि ग्रामीण पृष्ठभूमि के छात्र कृषि आधारित व्यवसाय में कम रुचि रखते हैं, तथा कला और वाणिज्य के छात्रों की रुचि शारीरिक श्रम की अपेक्षा प्रशासनिक और अनुनयात्मक कार्यों जैसे ''व्हाइट कॉलर जॉब'' में होती है।

आर. भार्गव (2013) ने राजस्थान में अध्यनरत व्यावसायिक शिक्षा के छात्रों की व्यावसायिक रुचि तथा उनकी कठिनाइयों का अध्ययन करके निष्कर्ष निकला कि अधिकांश छात्र व्यावसायिक रुचि तो रखते थे परंतु उनके सम्मुख योग्य प्रशिक्षित शिक्षकों का अभाव, वित्तीय संसाधनों का अभाव, उचित मार्गदर्शन का अभाव जैसे सामान्य कमियां पाई गई।

एस. मोहन एवं एन. गुप्ता (2011) ने व्यावसायिक रुचियाँ से संबंध कारकों का अध्ययन करके जिन महत्वपूर्ण कारकों (रुचि करको) को प्राप्त किया उनमें से रुचि, प्रेरणा,व्यक्तिगत चिंतन, मूल्य, आत्म प्रत्यय स्तर, कृत्य परिपक्वता तथा भावी अध्ययन संभावनाएं प्रमुख थी।

बी. गौतमी (2004) ने कक्षा आठवीं और दसवीं के छात्रों की शैक्षिक और व्यावसायिक अभिरुचियों का अध्ययन करके निष्कर्ष दिया कि छात्रों की शैक्षिक अभिरुचियों से सह संबंध होता है। ग्रामीण तथा शहरी छात्रों की प्राथमिकता क्षेत्र में समानता होती है, जबकि छात्र–छात्राओं में दोनों प्रकार की रुचियां में पर्याप्त अंतर पाया जाता है।

एस. सरस्वती (2016) ने कक्षा दसवीं के 400 छात्रों पर अध्ययन किया कि क्या व्यक्तित्व की विधाएं व्यावसायिक रुचि से सम्बद्ध होती हैं? इन्होंने निष्कर्ष में पाया कि छात्रों की व्यावसायिक रुचिया उनकी शैक्षिक रुचियों से संबंधित नहीं होती हैं तथा व्यावसायिक रुचियाँ और व्यक्तित्व की विधाओं का परस्पर संबंध नहीं होता।

शोध कार्य के उद्देश्य

उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्र–छात्राओं की व्यावसायिक रुचि का अध्ययन करना है।

अध्ययन की परिसीमाएं

संबंधित शोध के लिए शोधकर्ता द्वारा उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के कक्षा ग्यारहवीं में अध्यनरत छात्र छात्राओं को लिया गया है।

शोध में प्रयुक्त उपकरण

संबंधित शोध के लिए शोधकर्ता ने एस पी कुलश्रेष्ठ द्वारा निर्मित व्यावसायिक रुचि प्रपत्र वीआईआर का प्रयोग किया है जिसमें 10 आयाम है।

क्रमांक	लिंग	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	मानकविचलन	टी – मान
1	छात्र	20	81.2	12.76	- —
2	छात्राएं	20	79.7	12.62	

तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है की छात्र के व्यावसायिक रुचि के प्राप्तांको का मध्यमान 81.2 एवं मानक विचलन 1276 है एवं छात्राओं की व्यावसायिक रुचि के प्राप्तांको का मध्यमान 79.7 एवं मानक विचलन 12.62 है। t का मान .36 प्राप्त हुआ जो कि 0.05 स्तर पर 1.686 से कम है जो इस तथ्य की पुष्टि करता है कि छात्र और छात्राओं की व्यावसायिक रुचि में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया अतः यह परिकल्पना स्वीकृत होती है।

निष्कर्ष

इस शोध अध्ययन में यह पाया गया कि कलात्मक के क्षेत्र में ही छात्राओं की रुचि छात्रों से कम पाई गई। एग्रीकल्चर, रचनात्मक, व्यवसायिक,कार्यकारी प्रबंधक, घर का काम, साहित्य, प्रेरक, समाज और वैज्ञानिक जैसे व्यावसायिक रुचि क्षेत्र में छात्र एवं छात्राओं की रुचि लगभग बराबर पाई गई।

संदर्भ सूची

1. गोड़े एच. सी. (1973) दिल्ली के विद्यालय के छात्रों की व्यावसायिक आकांक्षाओं को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन, शोध आईआईटी, नई दिल्ली।
2. सिंह गुमान साहू (1997) उच्चतर माध्यमिक स्तर में अध्यनरत सामान्य जाति एवं अनुसूचित जाति एवं जनजाति वर्ग के छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन, शोध प्रबंध, पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर।
3. ए. बी. जे. ओ (1970) नाइजीरियन किशोरों का शैक्षणिक एवं व्यवसायिक आकांक्षा का अध्ययन, *जनरल आफ एजुकेशन एंड वोकेशनल मेजरमेंट,* –462 अगस्त वॉल्यूम 481, पृ. 55 –67।

****